भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में चंपारण सत्याग्रह आंदोलन और महात्मा गांधी

Ram Lal Bhil

Research Scholar -History, Jai Minesh Adivashi University Kota

सारांश:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में चंपारण का नाम विशेष महत्व रखता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही मिथिला की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सीमाओं के अंतर्गत रहा है। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह का पहला सफल प्रयोग विदेश में किया था, और स्वदेश लौटने के बाद उन्होंने इस नवीन और सशक्त हथियार का भारत में पहली बार चंपारण जिले में साहसपूर्वक और सफलतापूर्वक उपयोग किया। यह आंदोलन सत्य, अहिंसा, और आत्मबल के सिद्धांतों पर आधारित था, जो गांधीजी के विचारों की मूल आत्मा थे। गांधीजी का मानना था कि मानव कष्टों का निवारण सत्याग्रह के माध्यम से ही संभव है, लेकिन इसका उचित और प्रभावी उपयोग आत्मबल, सेवा, त्याग, और आत्मशुद्धि की भावना पर निर्भर करता है। चंपारण में अंग्रेज नीलहे साहूकारों द्वारा किसानों पर किए जा रहे शोषण और अत्याचार को समाप्त करने के लिए गांधीजी ने सत्याग्रह का नेतृत्व किया। उनके इस आंदोलन ने न केवल चंपारण की जनता को अत्याचारों से मुक्ति दिलाई, बल्कि पूरे देश में अंग्रेजी शासन के खिलाफ लड़ाई का मार्ग प्रशस्त किया।

चंपारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का वह महत्वपूर्ण चरण था, जिसने गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह की ताकत को प्रमाणित किया। यह आंदोलन केवल चंपारण के किसानों की मुक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने भारत की जनता को अंग्रेजी शासन से मुक्त करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर संघर्ष का आधार तैयार किया। गांधीजी की यह रणनीति आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के माध्यम से अंग्रेजों के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का मूल बनी।

इस प्रकार, चंपारण सत्याग्रह न केवल गांधीजी के विचारों और सिद्धांतों का व्यावहारिक उदाहरण था, बल्कि यह भारत की आजादी के आंदोलन में एक क्रांतिकारी मोड़ साबित हुआ। चंपारण के किसानों की मुक्ति के लिए उठाया गया यह कदम, अंततः पूरे भारत को विदेशी दासता से मुक्त करने की दिशा में अग्रसर हुआ। यह सत्याग्रह न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आज भी सत्य, अहिंसा और न्याय की शक्तियों में अडिग विश्वास का प्रतीक है।

प्रस्तावना

सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह। यह न केवल एक नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण है, बल्कि एक सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम भी है। सत्याग्रह व्यक्ति को सत्य की राह पर चलने के लिए प्रेरित करता है और उसमें असीम साहस और आत्मबल का संचार करता है। महात्मा गांधी के अनुसार, सत्याग्रह केवल विरोध का साधन नहीं है; यह नैतिकता और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित एक उच्चतर आदर्श है। सत्याग्रह को बनाए रखने के लिए अहिंसा इसका अनिवार्य आधार है, और यह विरोध के साथ-साथ आत्मशुद्धि का भी मार्ग प्रशस्त करता है। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अन्यायपूर्ण कानूनों के विरोध में निष्क्रिय प्रतिरोध का प्रयोग किया था। हालांकि, धीरे-धीरे उन्होंने महसूस किया कि उनका आंदोलन "निष्क्रिय प्रतिरोध" से अधिक गहन और सकारात्मक था। सत्याग्रह केवल कानून का विरोध नहीं करता, बल्कि केवल उन कानूनों का विरोध करता है जो नैतिकता और न्याय के विपरीत हों। गांधीजी के लिए नैतिकता सर्वोपरि थी, और उनका मानना था कि सत्याग्रही को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर अडिग रहना चाहिए। गांधीजी ने सत्याग्रह के व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए यह बताया कि सत्याग्रही को अपनी मांगों के प्रति दृढ़ रहना चाहिए, लेकिन विरोध करते समय मर्यादा और संयम का पालन करना चाहिए। उनका विचार था कि सत्याग्रह जनहित के लिए होना चाहिए, न कि व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए। सत्याग्रह का लक्ष्य विरोधी पक्ष से संवाद और सहयोग के रास्ते खोलना है, और केवल तब इसका प्रयोग किया जाना चाहिए जब सभी अन्य प्रयास विफल हो जाएं।

सत्याग्रही को आत्मशुद्धि का ध्यान रखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिन बुराइयों के खिलाफ वह संघर्ष कर रहा है, वे बुराइयां उसके अपने भीतर मौजूद न हों। सत्याग्रह केवल विरोध का माध्यम नहीं है, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का भी माध्यम है। गांधीजी ने सत्याग्रह

को विनम्रता और सेवा का प्रतीक माना और इसे हिंसा के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। गांधीजी के सत्याग्रह में अहिंसक अस्त्रों का समावेश था, जिनमें असहयोग आंदोलन, सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार, धरना, सविनय अवज्ञा, उपवास और आमरण अनशन जैसे साधन शामिल थे। उन्होंने यह भी कहा कि सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए रचनात्मक कार्यों का होना आवश्यक है। उनके 15-सूत्रीय सकारात्मक कार्यक्रम में खादी का प्रचार, ग्रामोद्योगों का विकास, ग्राम स्वराज्य की स्थापना, बुनियादी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, नारी उद्धार, और आर्थिक समानता जैसे विषय शामिल थे।

इस प्रकार, सत्याग्रह केवल विरोध का एक साधन नहीं था, बल्कि यह समाज को न्याय, समानता, और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाला एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण था। महात्मा गांधी का सत्याग्रह न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख आधार बना, बल्कि यह विश्व भर में अहिंसा और सत्य की शक्ति का प्रतीक भी बन गया।

चम्पारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने महात्मा गांधी की सत्याग्रह नीति को देशव्यापी पहचान दिलाई। यह घटना न केवल नील किसानों की दुर्दशा को उजागर करती है, बल्कि उपनिवेशवाद के शोषणकारी स्वरूप और उसके विरुद्ध भारतीयों की सामूहिक चेतना को भी परिलक्षित करती है। चम्पारण, बिहार का यह भू-भाग, अपने प्राचीन मिथिला क्षेत्र के अंतर्गत आते हुए, अंग्रेज निलहे कोठीवालों की शोषणकारी नीतियों का केंद्र बन गया था। यहाँ के किसान "तीन-कठिया" पद्धति के तहत अपनी उपजाऊ जमीन पर नील की खेती करने के लिए बाध्य थे, जिसके बदले उन्हें बहुत ही मामूली भुगतान मिलता था। नील की खेती के साथ-साथ कोठीवालों द्वारा किसानों पर किया गया शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण चम्पारण की जनता के लिए असहनीय हो गया था। कोठीवाले जमींदारों से ठेकेदारी कर किसानों पर प्रभुत्व जमाते थे और मामूली कारणों पर किसानों को अपमानित करना, जुर्माना लगाना या उनके सामान को जब्त कर लेना आम बात थी। किसानों की दुर्दशा इतनी गंभीर थी कि उन्हें कोठीवालों के सामने जूते पहनकर या छाता लेकर जाने तक की इजाजत नहीं थी।

महात्मा गांधी के चम्पारण आगमन ने इस संघर्ष को नई दिशा दी। 1917 में, जब गांधीजी ने चम्पारण का दौरा किया, तो उन्होंने किसानों की समस्याओं को समझा और उनके समर्थन में सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया। गांधीजी का यह कदम अहिंसात्मक प्रतिरोध का प्रतीक था, जो न्याय और मानवाधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए किया गया था। सत्य, अहिंसा और आत्मशुद्धि पर आधारित इस आंदोलन ने न केवल चम्पारण के किसानों को उनके अधिकार दिलाए, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई ऊर्जा भी प्रदान की।

चम्पारण सत्याग्रह की सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को भी चुनौती दी जा सकती है। यह आंदोलन भारतीय जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया और महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत की स्वतंत्रता की दिशा में पहला कदम साबित हुआ।

चम्पारण के निलहे कोठीवाल साहबों द्वारा अपनाई गई अन्यायपूर्ण कृषि पद्धतियाँ और शोषणकारी व्यवस्थाएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गईं। इन पद्धतियों के तहत ग्रामीण किसान और मजदूर न केवल आर्थिक शोषण के शिकार हुए, बल्कि सामाजिक और मानसिक उत्पीड़न का भी सामना करना पड़ा।

शोषणकारी पद्धतियाँ और उनके प्रभाव

1. **जिराएन पद्धति:** जिराएन पद्धति में निलहे कोठीवाल साहब अपने वेतनभोगी कर्मचारियों के माध्यम से नील की खेती करवाते थे। किसान और मजदूरों को बिना उनकी सहमति के जबरदस्ती खेतों में काम करने पर मजबूर किया जाता था। पारिश्रमिक इतना कम होता था कि उससे उनकी मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं होती थीं। यह अन्यायपूर्ण व्यवस्था किसानों में असंतोष तो उत्पन्न करती थी, लेकिन उनके पास इसे व्यक्त करने का कोई साधन नहीं था।
2. **असामीवार पद्धति:** असामीवार पद्धति के तहत कोठीवाल साहब किसानों की अच्छी और उर्वर भूमि पर नील की खेती करवाते थे। "तीन-कठिया" व्यवस्था के अनुसार, प्रत्येक किसान को अपनी कृषि भूमि में से सबसे उपजाऊ हिस्सा नील की खेती के लिए देना पड़ता था। इससे किसानों की खाद्यान्न उत्पादन क्षमता घट जाती थी, जिससे उन्हें और उनके परिवार को भुखमरी का सामना करना पड़ता था।
3. **खुराकी और कुरताउली पद्धतियाँ**

- **खुराकी पद्धति:** इसमें कोठीवाल साहब उन किसानों से नील की खेती करवाने की लिखित सहमति (कबुलियत) ले लेते थे, जो उनकी कोठी के अधीन नहीं थे। यह प्रक्रिया किसानों के लिए एक और शोषणकारी जाल था।

- **कुरताउली पद्धति:** यह पद्धति सबसे अमानवीय और कष्टप्रद थी। इसमें कोठीवाल साहब किसानों को ऋण देकर उनकी पूरी भूमि पर नियंत्रण प्राप्त कर लेते थे। यह ऋण इतना दीर्घकालीन और कठोर शर्तों वाला होता था कि अधिकांश किसानों के जीवनकाल में उसका भुगतान असंभव हो जाता था। परिणामस्वरूप, किसान और उनके परिवार के सदस्य कोठीवाल साहब के दास बनकर जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो जाते थे।

4. **मजदूरी और अन्याय:** कई बार मजदूरों को नील की खेती में बिना किसी मजदूरी के काम करना पड़ता था। यदि उन्हें पारिश्रमिक मिलता भी था, तो वह केवल नाममात्र का होता था। मजदूरों और किसानों को उनकी मेहनत का सही मूल्य देने के बजाय कोठीवाल साहब उनकी उपजाऊ भूमि, पालतू पशु, और अन्य संपत्तियों को जब्त कर लेते थे। न्यायिक प्रणाली पर अंग्रेजों का प्रभुत्व होने के कारण, इन गरीब मजदूरों और किसानों के पास न्याय पाने का कोई साधन नहीं था।

शोषण के विरुद्ध सत्याग्रह का उदय

महात्मा गांधी ने चम्पारण में किसानों की दयनीय स्थिति को देखते हुए सत्याग्रह आंदोलन का प्रयोग किया। सत्य, अहिंसा, और सेवा के सिद्धांतों पर आधारित इस आंदोलन ने न केवल चम्पारण के किसानों को राहत दिलाई, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। गांधीजी के प्रयासों से किसानों को न केवल नील की खेती की अनिवार्यता से मुक्ति मिली, बल्कि उनके आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति जागरूकता भी बढ़ी। चम्पारण में निलहे कोठीवालों का शोषण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक ऐसा यथार्थ था, जिसने गांधीजी को पहली बार भारतीय जनता की समस्याओं के साथ खड़ा होने का अवसर दिया। यह आंदोलन न केवल अंग्रेजी हुकूमत की क्रूर नीतियों के खिलाफ था, बल्कि यह भारतीय जनता के आत्मबल और साहस का प्रतीक भी बना। चम्पारण का सत्याग्रह यह संदेश देता है कि जब संगठित और अहिंसात्मक प्रयास किए जाते हैं, तो अन्याय और शोषण के खिलाफ भी विजय प्राप्त की जा सकती है। 1916 में लखनऊ में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन के दौरान, चंपारण के किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी से मुलाकात की। उन्होंने उत्तर बिहार में नील की खेती करने वाले किसानों की दुर्दशा और अंग्रेज कोठी मालिकों के अमानवीय व्यवहार की आपबीती सुनाई। यह मुलाकात केवल एक निवेदन नहीं थी; यह उस युग के भारतीय किसानों की व्यथा और संघर्ष का प्रतीक बन गई, जिसने गांधीजी को चंपारण जाने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी जब चंपारण पहुँचे, तो उनकी उपस्थिति ने तत्कालीन प्रशासन को विचलित कर दिया। उन्हें क्षेत्र छोड़ने का आदेश दिया गया, लेकिन उन्होंने कानून का पालन करते हुए अपनी उपस्थिति बनाए रखी। स्थानीय प्रशासन के इस रवैये के बावजूद, गांधीजी ने किसानों की समस्याओं को समझने के लिए उनका बयान दर्ज करना शुरू किया। वे लगातार किसानों और मजदूरों से मिले और उनके दु:ख-दर्द को गहराई से समझा। उनकी ईमानदारी और निष्ठा ने न केवल किसानों का भरोसा जीता, बल्कि उन्हें एक नई शक्ति भी प्रदान की। बिहार के उपराज्यपाल ने गांधीजी के सत्याग्रह के प्रति जनता के समर्थन और व्यापक प्रभाव को देखते हुए उनके खिलाफ लगाए गए अभियोग को वापस ले लिया। यह गांधीजी की पहली नैतिक और राजनीतिक जीत थी। इसके बाद, चंपारण में किसानों की समस्याओं की जाँच के लिए एक समिति का गठन किया गया, जिसमें गांधीजी ने सदस्य के रूप में अपनी भूमिका स्वीकार की। उनकी शर्त थी कि वे किसानों के अधिकारों की वकालत करने के लिए स्वतंत्र रहेंगे और यदि सरकार की सिफारिशें संतोषजनक नहीं होंगी, तो वे किसानों के पक्ष में अन्य कदम उठाने के लिए स्वतंत्र होंगे।

इस समिति ने चंपारण के किसानों की समस्याओं का गहन अध्ययन किया और अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं। परिणामस्वरूप, "चंपारण एग्रीरियन बिल" पारित किया गया, जिसने किसानों के कष्टों का अंत किया। यह केवल एक कानून नहीं था, बल्कि भारतीय किसानों के लिए एक नई आशा का संचार था। चंपारण में गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह की सफलता ने पूरे भारत में सत्य और अहिंसा की शक्ति को साबित किया। यह आंदोलन केवल चंपारण तक सीमित नहीं रहा; इसका प्रभाव उत्तर बिहार के अन्य जिलों, जैसे दरभंगा और मुजफ्फरपुर, पर भी पड़ा। नीलहे कोठी मालिकों के अत्याचार कम हुए और उन्होंने अपनी जमीन बेचनी शुरू कर दी। गांधीजी ने चंपारण में केवल किसानों की आर्थिक समस्याओं को हल करने पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि उन्होंने शिक्षा और सामाजिक सुधारों की आवश्यकता को भी महसूस किया। उन्होंने किसानों और मजदूरों के बच्चों के लिए विद्यालय स्थापित करने और स्वच्छता अभियान शुरू करने की पहल की। उनका मानना था कि जब तक समाज के निचले स्तर के लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं होंगी, तब तक समाज का स्थायी उत्थान संभव नहीं है।

चंपारण सत्याग्रह गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों की शक्ति का प्रमाण था। इस आंदोलन ने न केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि अहिंसक संघर्ष के माध्यम से अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा सकती है। गांधीजी ने इस आंदोलन के दौरान जिस निष्ठा और धैर्य का प्रदर्शन किया, उसने उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक अजेय नेता के रूप में स्थापित किया। चंपारण सत्याग्रह की सफलता ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई ऊर्जा प्रदान की और गांधीजी को राष्ट्रीय स्तर पर जन-आंदोलनों का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया।

इस सत्याग्रह ने यह दिखा दिया कि जब नेतृत्व नैतिकता और जनता के प्रति समर्पण से प्रेरित होता है, तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। चंपारण में गांधीजी और उनके सहयोगियों की विजय केवल किसानों की जीत नहीं थी; यह पूरे भारत के लिए एक प्रेरणा थी, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक सशक्त और संगठित बना दिया।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी सत्याग्रह को न केवल एक राजनीतिक रणनीति, बल्कि एक आध्यात्मिक और नैतिक साधना के रूप में देखते थे। उनके विचार में सत्याग्रह केवल अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं था, बल्कि यह आत्मशुद्धि और समाज की सामूहिक चेतना के उत्थान का माध्यम था। गांधीजी के लिए सत्याग्रह का सार सत्य और अहिंसा के आदर्शों में निहित था, जो समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त करने और अत्याचार का विरोध करने का एक प्रभावी साधन था। सत्याग्रह के माध्यम से गांधीजी ने यह दिखाया कि अहिंसा केवल एक सिद्धांत नहीं है, बल्कि एक व्यवहारिक शक्ति है, जो परिवर्तन ला सकती है।सत्याग्रह में आत्मानुशासन और त्याग की महत्ता थी। यह संघर्ष केवल बाहरी ताकतों के खिलाफ नहीं था, बल्कि आत्म-अनुशासन के माध्यम से अपने भीतर की कमजोरियों और भय का भी सामना करना था। गांधीजी का मानना था कि सत्याग्रह करने वाला व्यक्ति सत्य के लिए किसी भी प्रकार के कष्ट को स्वीकार करने के लिए तैयार रहता है और वह सत्य की रक्षा के लिए अपनी सीमाओं से परे जाने का साहस करता है। उनके अनुसार, सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य केवल विरोध करना नहीं है, बल्कि विरोध करने वाले और अन्याय करने वाले दोनों को सत्य के मार्ग पर लाना है।

गांधीजी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह एक आदर्श उदाहरण बन गया, जिसने न केवल किसानों के अधिकारों की रक्षा की, बल्कि समाज को यह संदेश दिया कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से अन्याय और अत्याचार को समाप्त किया जा सकता है। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने देश में सत्याग्रह के विचार को स्थापित किया और इसे एक सशक्त जनांदोलन का रूप दिया। गांधीजी ने सत्याग्रह के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि अन्याय का विरोध केवल अहिंसक साधनों से ही प्रभावी और स्थायी हो सकता है।

संदर्भ

1. डाव, सीताराम झा "श्याम": भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की रूपरेखा, पृ. 82
2. थॉमस पाइन: "अहिंसा के तत्त्व," पृ. 149
3. कामेश्वरी चरण सिंह: "मैं और मेरी साथी," पृ. 1-2
4. फर्नांडीज: "सत्याग्रह के सिद्धांत," पृ. 54
5. चैंबरलेन: "गांधीजी का सत्याग्रह," पृ. 148